

71-84

~~71-85~~

Names are to be corrected

pend K-82 (KS-25)

" 84 (KS-54A)

8 71(02)

K-73

K-72

~~72~~

KS 130

परम अर्थ की प्राप्ति और ब्रह्म आचरण

बड़े प्रपंच कर घर धन खिन्ने लियाव
(सत्संदेश दिसंबर 1962 में प्रकाशित प्रवचन)

हजूर महाराज जी का प्रवचन

स्वामी तुलसीदास जी का भाषण समाप्त होने के बाद हजूर महाराज जी ने माईक्रोफोन लिया और यह वचन फरमाया ।

आप भाइयों ने, माफ करना, नंगी तस्वीर देखी अपने जीवन की, जो स्वामी जी को नज़र आ रही है । मेरे ख्याल में कोई आदमी भी ज़रा गौर से देखेगा तो वाकई हालात बहुत बुरे हो रहे हैं । मगर इस सबका इलाज क्या है ? युनैसको कान्फ्रेंस हुई थी यहाँ देहली में । वहाँ मैंने उनको यह कहा था कि भई मानते हैं कि सारे हालात बिगड़ गए हैं । सबको ठीक करना कहां तक मुमकिन है या नहीं है, कम से कम जितने भाई आप बैठे हो, जिन तक यह आवाज़ जा रही है, अगर वही सुधर जाएं तो उनसे और कइयों की, उनसे मिलने वालों की भी सुधरने की उम्मीद हो सकती है । हालात वाकई बहुत खराब हैं, हर सूरत से । परमात्मा का मिलना मुश्किल नहीं है, इंसान का बनना मुश्किल है, समझे । जब तक इंसान बने नहीं, परमात्मा का मिलना, "हनीज दिल्ली दर अस्त ।" इंसान के बनने की बुनियात कहां से शुरू होती है ? ब्योहार शुद्ध हो, आहार शुद्ध हो, आचार शुद्ध हो, Basic चीज़ है । जिसका ब्योहार शुद्ध नहीं, उस ब्योहार में लोगों का खून निचुड़ा हुआ आ रहा है, किसी का हक मारा है, झूठ से, फरेब से, धोखेबाजी से, रियाकारी से, कपट से, चोरी से, दरपर्दा या ज़ाहिरी, लूट खसूट से रूपया कमाया है, तो उसका असर वैसा

हो जाएगा कि नहीं ? कुदरती बात है । तो पहली बात, सारे महापुरुषों ने इस बात पर जोर दिया है कि "दसां गृहवां दी किरत" यह पंजाबी लफ्ज़ हैं, money earned by the sweat of thy brow, मेहनत से रूपया कमाया गया हो, नेकनियती से, जिसमें किसी का हक न मारा हो, ईमानदारी का हो । पहली बात यह है । जिस तरीके से रूपया आएगा, वैसा ही खर्च हो जाएगा । दूसरे हैं, आहार शुद्ध हो । आहार का असर होता है । कुत्ते को सब्ज़ी पर रखो, बड़ा असील, उसे मछली, अंडे आदि पर रखो तो फाड़कर खाता है । खुराक का असर पड़ता है ।

तो सात्विक खुराक बरतनी चाहिए । जो परमार्थ में जाना चाहते हैं, उनको सात्विक खुराक की ज़रूरत है । कारण क्या है कि हमने काम (passions) पर कब्ज़ा पाना है । जिन चीज़ों के इस्तेमाल से हमारे passions (वासनाएं) उभरें, वे नहीं बरतनी । बात सिर्फ इतनी है । सात्विक खुराक किसको कहते हैं ? फल हैं, सब्ज़ियां हैं, अनाज है, दूध है, मक्खन है, घी है । इनका भी संयम से इस्तेमाल हो । उतना खाओ जितना हज़म हो । अगर यह भी ज़रूरत से ज्यादा खाओगे तो भी उभार बढ़ता है । तो पहली बात यह है । इसके लिए कई चीज़ें देखनी पड़ती हैं । भूख से कम खाओ । जितना भूख से ज्यादा खाओगे उतना ही चीज़ हज़म नहीं होगी । Foreign matter रह जाएगा । बीमारियां पैदा करेगा । आलस्य, निद्रा, कुदरती बात है । जो चुस्ती है न जिस्म में, वह नहीं रहेगी । तो शेख सादी साहिब कहते हैं, खाने के लिए, कि पेट का आधा हिस्सा खाने से भरना चाहिए, तीसरा हिस्सा पानी से भरना चाहिए और चौथा हिस्सा खाली रखना चाहिए । फिर लिखते हैं कि जितना भी पेट का हिस्सा खाली रहेगा उतना खुदा के नूर से भर जाएगा । हमें संयम का जीवन बनाना है ।

तो सारे महापुरुषों ने यह कहा है । वैसे भी अकल की बात है कि हमारे अंदर बीमारियाँ कैसे पैदा होती हैं ? जो चीज़ें हज़म नहीं होती हैं, उनसे ही बहुत सारी बीमारियां बनती हैं । महर्षि शिवव्रत लाल जी थे, उनके पास एक

(मन में)

दिन एक आदमी गया कि महाराज मुझे बड़ा आलस रहता है, मैं बैठना चाहता हूँ, बैठ नहीं सकता हूँ। कहते हैं, पेट की तरफ ध्यान दो। एक और आदमी गया, कि जब मैं बैठना चाहता हूँ तो मुझे नींद आती है। कहते हैं कि पेट की तरफ ध्यान दो। एक और आदमी गया कि महाराज, मेरा मन ठहरता नहीं, भागता फिरता है। कहते हैं कि पेट की तरफ ध्यान दो। पेट वाकई, बावर्चीखाना (रसोई) जैसे घर में होता है न, जिसका बावर्चीखाना सही है, उस घर की सेहत ठीक है। जिस्म का बावर्चीखाना है पेट, पेट में उतनी चीज़ डालो जो हज़म हो जाए, नहीं तो जो फालतू रहेगी वह नालियां बंद करेगी, बीमारियां पैदा करेगी, गनूदगी (निद्रा) पैदा करेगी, नींद आएगी, आलस पैदा करेगी। बात समझे ! तो जैसी क्वालिटी होगी न खुराक की, वैसा ही असर बनेगा।

इसलिए महापुरुषों ने खाने का परहेज़ निहायत लाज़मी रखा है, और इसके साथ हमने चेतन होना है। ज्यादा ऐसी चीज़ों का इस्तेमाल जिससे हमारी होश कायम न रहे, होश से बेहोश हों, नहीं बरतनी चाहिए। जितनी नशे वाली चीज़ें हैं, शराब है, गांजा है, चरस है, भांग है, तम्बाकू है और चीज़ें जो नशे को बढ़ाएं, नहीं बरतनी हैं। हमारी उस चेतनता ने जो बढ़ना है न, उस पर गनूदगी न आए। तो खाने पीने का परहेज़ सब महापुरुषों ने बयान किया है। हज़रत मुहम्मद साहब के पास चालीस पहले पहले शागिर्द (शिष्य) हुए। तो उस वक्त एक आदमी ने कहा, आदमी हैं बहुत सारे, एक हकीम साथ लगा दिया कि शायद कोई बीमार हो तो उसकी दवाई वगैरा बीमारी के वक्त वह काम आए। कहते हैं छः महीने हकीम साथ रहा, कोई बीमार नहीं हुआ। तो हज़रत मुहम्मद साहब के पास आकर कहने लगे कि महाराज छः महीने से मैं आपके साथ हूँ। बीमार कोई हुआ नहीं, मेरी कोई ज़रूरत है नहीं। कहने लगे, भई मेरी यह हिदायत है कि भूख से एक लुकमा (ग्रास) कम खाओ, सिर्फ़ दो वक्त खाओ। दिन को खूब रियाज़त (प्रार्थना) करो, ईमानदारी की रोज़ी कमाओ, साथ ही आत्मा को प्रभु से जोड़ो और ख्यालात को पाक-पवित्र रखो,

किसी हकीम की ज़रूरत नहीं। जब तक यह इन बातों का पालन करेंगे, इनको हकीम की ज़रूरत नहीं है। यह चीज़ें उनके ही लिए नहीं हैं, हमारे लिए भी हैं।

तो आहार की जब तक क्वालिटी ठीक नहीं होती, मात्रा भी, तब तक परमार्थ कहां है ? तीसरे आचार शुद्ध हो, आचरण शुद्ध हो। आचार शुद्ध से मुराद ब्रह्मचर्य की रक्षा है। ब्रह्मचर्य किसको कहते हैं ? ब्रह्म के पाने के लिये आचरण, यह है लफ्ज़ी माने। प्रभु की प्राप्ति के लिए जो conduct of life, जो जीवन अख्तियार किया जाए उसका नाम है ब्रह्मचर्य। लफ्ज़ी माने थोड़े लफ्ज़ों में। तो आचरण को ठीक करो। ब्रह्मचर्य में मायने केवल Passion (वासना) को रोकना नहीं, काम ही पर शीलता को धारण करना नहीं, बल्कि सब इंद्रियों के काबू करने का नाम ब्रह्मचर्य है। आंखों पर भी काबू करो, क्योंकि आंखों से बाहर के बड़े संस्कार आते हैं। हिसाबदानों ने हिसाब लगाया है कि अस्सी सदी के करीब संस्कार खाली आंखों के रास्ते आते हैं। जो सिनेमा वगैरा देखते हैं, उनका क्या हाल होगा ? आप बताएं।

ठंडे दिल से विचारो। परमार्थी के लिए यह जीवन नहीं। ज्यादातर सिनेमा आपने देखा है जो किसी महात्मा का भी सिनेमा आ जाए न, उसमें भी जब तक वह दूसरा रंग न दे तो दो-तीन दिन से ज्यादा चलता नहीं, कोई conduct वगैरह के बारे में कोई चीज़ आए वह दो-चार दिन से ज्यादा नहीं चलती है। जिसमें विषय विकारों का उभार हो, वह महीनों तक चलती है, बात समझे ! आंखों से संस्कार ले ले कर, और जिस वायुमंडल में ऐसे बहुत सारे, माफ करना भूत बैठे हों, जिनके जिस्मों से बेतहाशा इंद्रियों के भोगों-रसों की radiation होती हो, उसमें अच्छे से अच्छा आदमी बैठे, उसको भी असर पड़ता है। बदबूदार जगह पर बैठोगे तो बदबू आएगी कि नहीं ? समझे ! जिनके नाक बंद होंगे वह अलहदा (अलग) बात रही। तो मंडल का असर होता है। देखने में क्या आता है ? पिता भी नाच रहा है, माता भी नाच रही है। माफ करना बच्चे भी नाच रहे हैं, सिनेमा देख रहे हैं। मैंने इस मज़मून को तब लिया

कि इन्होंने (स्वामी तुलसीदास जी ने) बड़ी अच्छी नंगी तसवीर पेश की है ।

मैं बड़ी साफगोई (स्पष्टता) तो करता रहता हूँ मगर इतनी नंगी कभी नहीं पेश की । बात वही है । मैं यह कहता हूँ, मैं अपनी उम्र का जिक्र करता हूँ कि हमारे जब बहन-भाई पैदा हुआ करते थे तो हम पूछते थे कि यह कहां से आए ? आश्चर्य की बात थी, कल कोई नहीं था, आज यह कहां से आ गया ? तो हमें कहा जाता था कि दाई दे गई है । हम मान लेते थे । क्योंकि हमें इस बात का inference (पता) कभी था ही नहीं कि बच्चे कहां से आते हैं ? माता पिता का जीवन इतना पवित्र था कि ख्याल में भी नहीं आता था कि बच्चे कहां से आते हैं । समझे ! आज क्या हाल है ? छोटे बच्चों से पूछो, यही करतूत है । मैं आपको कहूँ, मेरी शादी हुई, मैं नौकर हो गया था । मुझे पता नहीं था, माफ करना बेवकूफों में मुझे शामिल कर लो कि शादी क्या होती है ? आप देखिए, मैं अर्ज कर रहा हूँ कि कितना हमारे लोगों का आचार बिगड़ चुका है । जिसका आचार बिगड़ गया, व्यवहार बिगड़ गया, आहार बदल गया, अरे भई किस मुंह से वह हलुवा खाना चाहता है परमार्थ का ? तो इसलिए ब्रह्मचर्य का मतलब इन सारी इंद्रियों पर कब्जा पाना है । इसलिए कहा :

सत्य वचन आधीनता पर तिरिया मात समान ।

याह ते ~~हम~~ ^{कुरि} ना मिले तुलसी दास जमान ॥

कि सत्य को धारण करो, झूठ फरेब, दगाबाजी, रियाकारी, कपट, चोरी, हक मारना, खून निचोड़ना छोड़ो । नम्रता को धारण करो और शील को धारण करो । कहते हैं, अगर यह तीनों धारण करने से आपको प्रभु नहीं मिलता है तो मैं ज़ामिन हूँ । यही हज़रत मुहम्मद साहब ने कहा है कि अगर आप दो उज़्वों (इंद्रियों) को, पहला जो दो होठों के दरमियान है, क्या ? ज़बान ! दूसरा उज़्व जो दो रानों के दरमियान है, अगर इन पर काबू कर लो तो मैं तुम्हारा खुदा की दरगाह में ज़ामिन हूंगा । याद रखो जिसका ज़बान पर काबू नहीं किसी और चीज़ पर काबू कर नहीं सकता है । जिसका आंख पर काबू नहीं, वह कहीं का न रहा । वह बहक जाता है । यह हालत है सबकी ।

तो ब्रह्मचर्य का मतलब आप समझे ? ब्रह्म के पाने के लिए आचरण धारण करने का नाम है ब्रह्मचर्य । उसमें यह सारी चीजें शामिल हैं । अब शील के मुतल्लिक बड़ी भारी ज़रूरत है । अगर यही हालत आजकल रही जो चल रही है, एक मिनट में नब्बे आदमी रोज़ बढ़ रहे हैं, एक एक मिनट में पैदा हो रहे हैं, ज्यादा, मरने वालों के मुकाबले में । जितने मरते हैं और जितने पैदा होते हैं, उनसे नब्बे आदमी रोज़ एक मिनट में बढ़ रहे हैं । अगर छः, सात साल और रह गए, शायद इंसान-इंसान को खाने लग जाए । उसके लिए गवर्नमेंट ने किया है । क्या किया, पता है आपको, फैमिली प्लानिंग । मेरे पास आए थे कि आप President (प्रधान) बन जाओ । मैंने कहा, भई आप family planning से बदमाशी को बढ़ाओगे कि कम करोगे ? यह बताओ । अब तो डरते-डरते किसी का कुछ हो तो चोरी-चोरी सामान करता है न, किसी तरह डॉक्टरों को कुछ रूपया देता है कि छुपा रहे । अब तो खुल्लम खुला जाओ अस्पताल को । इस तरह से ज़िंदगी का सुधार नहीं हो सकेगा, सत्यानास मारा जाएगा । ब्रह्मचर्य की रक्षा करो । एक दो बच्चे थोड़े हैं ?

पुराने ज़मानों में एकाध बाल बच्चा हो जाता था तो जंगलों की राह लेते थे । आज वह ज़माने नहीं रहे क्योंकि जंगलों में भी खाने पीने का सामान नहीं रहा । हमने गृहस्थ ही में अपने जीवन को बदलना है । अपनी ब्रह्मचर्य की ज़िंदगी रखो । पढ़ो, लिखो, विचारों, समझो । गृहस्थ आश्रम शास्त्र मर्यादा के मुताबिक गुज़ारा करो । शादी करने का मतलब किसी जीवन साथी को साथ लेना है जो ज़िंदगी में, गरीबों में, अमीरी में, दुख में, सुख में, हर हाल में साथ दे, दोनों मिलकर प्रभु को पाएं । एक फर्ज़ बाल-बच्चों का पैदा होना भी है । उसके लिए हिदायत है, शास्त्रों में दी है, क्या ? कि जब जब औलाद की खाहिश हो, तब तब ताल्लुक आए । जब बच्चा पेट में आ जाए, जब तक बच्चा पैदा होकर दूध पीता रहे, कोई ताल्लुक न हो । एक बच्चे को दो ढाई साल लग जाएंगे । ऐसे एक दो बच्चे हो भी जाएं तो "एका नारी सदा जती ।" माफ करना हैवानों (पशुओं) में ज्यादा ब्रह्मचर्य है हम से । उनका भी खास

समय है ताल्लुक का । इंसान का कोई समय नहीं, न दिन, न रात, गर्मी न सर्दी । हैवान बीमार हो, खाना छोड़ देता है । वह समझता है, खाना हमारे लिए है, हम खाने के लिए नहीं । हम समझते हैं हम खाने के लिए हैं । खा-खा-खाकर, जो चीज़ हज़म नहीं होती, उससे बीमारियां बनती हैं । उससे सारा सिस्टम बिगड़ जाता है । बात समझे !

हर एक महापुरुष ने शील धारण करने को कहा है । एक शील न रहे, सारे गुणों का नाश हो जाता है, इस एक शील के न रहने से । इसलिए ब्रह्मचर्य के माने आप अब समझे ! यह तैयारी है । आपको पता है, जो भी भाई यहां आते हैं उनको यह ताकीद की जाती है मगर आप लोगों, आप भाइयों के दिलों में वह बैठती नहीं कि डायरी रखो । डायरी बड़ी सोच समझकर रखी है । किसी का बुरा चितवन नहीं करो । मन करके, वचन करके, कर्म करके समझे ! सत्य को धारण करो, मन करके, वचन करके, कर्म करके । ब्रह्मचर्य की रक्षा का ध्यान करो । मन करके, वचन करके और कर्म करके और सब में परमात्मा है, सबसे प्यार करो । किसी से नफरत न हो । सबके अंतर उसी की आत्मा है । सबका जीवन आधार वही है ।

चूं बिदानिस्ती के अज हर दिल खुदास्त

जब यह जान लिया कि सबके अंतर वही बस रहा है, फिर सब का अदब करना चाहिए कि नहीं ? किसी का हक क्यों मारेगा ? प्रेम करो प्रभु से । प्रभु सब में है । सबसे प्रेम करो । Love knows service and sacrifice. प्रेम सेवा करना जानता है । और सेवा में जान भी देनी पड़ी तो दे दे और ना न करे । इसका नाम है प्रेम । यह है ज़मीन की तैयारी । इसको कहते हैं ब्रह्मचर्य की रक्षा । समझे ! जब तक यह नहीं, जिस मकान की बुनियाद ही ठीक नहीं, रेत पर मकान बना लो कितने दिन रहेगा ? न दिल सही, न दिमाग सही, न सेहत सही, ऐसा इंसान क्या करेगा ? मौलाना रूम साहब ने कहा कि जो शहवत क्या, काम में, Passions में गिरता है, सत्यानाश करता है अपना, उसकी आत्मा पर स्याही का परदा फिर जाता है । सबसे फिरता है,

मगर इससे और ज्यादा फिरता है। उनकी हिदायत है कि जो भी मक्के शरीफ जाएं, किसी स्त्री की तरफ न देखें। यह हिदायत है मक्के जाने वालों के लिए। किसी फकीर की कब्र पर जाओ तो वहां अपवित्र ख्याल वाले मत जाएं।

अरे भाई हमारे धर्म स्थान इसलिए बनाए गए थे कि उसमें जाओ, सब दुनिया भूल जाओ, सिवाय प्रभु के और किसी का ध्यान न रहे। इसलिए स्वामी विवेकानंद ने मद्रास में यह कहा कि जो पाप हम बाहर दुनिया में करते हैं उनको तो परमात्मा शायद बख्श देगा, जो पाप हम धर्म स्थानों में करते हैं वह पाप प्रभु भी नहीं बख्शता है। वहां की पवित्रता को हम ज़ायल कर देते हैं। धर्म स्थान धर्म स्थान नहीं रहे, माफ करना। लोग जाते हैं, हाथ लंगाकर आ गए, चलो। क्या मांगते रहे ? दुनिया ! कैसे ? वैसे ही खाना, वैसे ही पीना। ऊपर से चिकने चुपड़े बहुत हैं, हृदय सब काले हैं ? फिर ! लोगों को खुश करने से क्या होगा ?

लोग पतीने कुछ न होवे नाहिं राम आयणा ॥

लोगों के पतियाने से, खुश करने से, कुछ नहीं बनता। वह राम कोई अनजान बच्चा है कि उसको धोखा दे लगे ? दीवार पर काले दाग लगे हों, आप एक कोट, दो कोट, तीन कोट चढ़ाकर सफेदी के, उसको छिपा सकते हो। जो दिल में दाग लगे पड़े हैं, अरे भाई वह तो धोने से, बाहर की बनावट नहीं, वह नहीं धोए जाएंगे।

मन मैले सब किछ मैला तन धोते मन हच्छा न होए ॥

जिसका मन मैला है, उसका सब कुछ मैला है, सिर्फ तन की सफाई से मन की सफाई नहीं हो सकती है। बात तो मन की है। यही जहरीला साँप है जिसके हजार मुँह हैं ज़हर के चढ़ाने के। जब तक यह काबू में नहीं होता, काम नहीं बनता है। इसलिए कहा एक फकीर ने :

गर तो दारी दर दिले खुद अज्मे रफतन सूए दोस्त ।

यक कदम बर नफसे खुद ने दीगरे दर कूए दोस्त ॥

अगर हम प्रभु की गली में जाना चाहते हैं तो एक कदम अपने मन पर रखो। वह क्या, कि इसको खड़ा करो। दूसरा कदम उठाओगे, प्रभु की गली में पहुंच जाएगा। हम लोग sincere ^(सु/कर्म) नहीं। हम क्या चाहते हैं, यह भी हमें पता नहीं है। माफ करना, हमारा कोई आदर्श सामने नहीं है। मैं तो कई बार आपसे अर्ज किया करता हूँ कि अपना कुछ आदर्श का फैसला करो कि आप क्या बनना चाहते हो? मनुष्य जीवन पाने की सबसे बड़ी गर्ज ^(मं/लब) क्या थी? प्रभु को पाना। तो चाहिए था कि God first (परमात्मा पहले) बाकी बाद में मगर हम क्या करते हैं, World first (दुनिया पहले), फिर प्रभु! यही कारण अधोगति का हो रहा है। दिनों दिन बढ़ रहा है। जागृत पुरुष इस हालत को देखकर अफसोस करता है। जाने दीजिए परमार्थ को। जो गवर्नमेंट के इंचार्ज हैं, ^(पठक/पति) वह क्या कहते हैं? डॉक्टर राधा कृष्णन जो आजकल प्रेज़िडेंट हैं, उनसे मिलने का इत्तेफाक हुआ। कहते हैं, हम और पंडित जी (पंडित जवाहरलाल नेहरू, प्रथम प्रधान मंत्री) जब बैठते हैं, तो कहते हैं, क्या करें? हिंदुस्तान सारा ही बेईमान है। ^(वह) वह भी सच्चे हैं। क्या करें? कर क्या सकते हैं? याद रखो, Wanted reformers not of others but of themselves, हमें प्रचारकों की ज़रूरत है। वह प्रचारक नहीं जो दूसरों को उपदेश दें, बल्कि अपने आपको दें। आप जितने भाई बहने बैठे हैं, अगर आज से आप ^(वह) तड़िया (प्रण) कर लें, जो बात पेश की गई, मेरे ख्याल में बड़े नंगे तौर से सभी पेश की गई और बड़ी खोलकर भी पेश की गई शाईस्ता (सभ्य) तरीके से, अगर अब भी होश आ जाए तो। आप अपने आपको reform (सुधारो) करो। अपने घरों को ठीक करो। समझे। कितनी बेहतरी हो सकती है। कहने को तो सब कहते हैं कि मनुष्य जीवन भाग्य से मिला है, हमने प्रभु को पाना है। सब कुछ सुनते हैं। एक कान से सुनते हैं जो दूसरे कान से निकल जाता है। तीन किस्म के लोग सत्संग में आते हैं महात्मा के पास। एक तो, एक कान से सुना, दूसरे से निकल गया। एक तो ऐसे हैं जिनको पता ही नहीं कि बात क्या हुई? अपने फिक्र में वक्त निकल गया। ^(वह) वह क्या बातें लंबी चौड़ी बना रहे हैं, यह ^(वह) खासखाह फजूल बातें करते हैं। हम लोग जानते हैं यही कुछ।

जाने दो। तांघ यह है कि किस वक्त, कब, खत्म हो। पहले आते ही लेट हैं। वहां भी, जहां बैठे, कभी एक की तरफ झांका, कभी दूसरे की तरफ झांका, वक्त निकल गया। इससे आगे वह लोग हैं जो सुनकर याद कर लेते हैं। लोगों को ज्ञान ध्यान तो सुनाएंगे। समझे ! कान में गई, मुंह से निकलनी शुरू हो गई। चाहिए क्या कि :

जो वचन गुरु पूरे कहेयो सो मैं छीक गाठड़ी बांधा ॥

अपने पल्ले बांधो। अपने जीवन में धारण करो। जीवन में न धारण करने के कारण यह सब दुख है। मैंने कई बार आपसे अर्ज किया कि एक सत्संग काफी है इंसान के लिए, अगर उसको Digest (हज़म) कर ले, अपने जीवन में धारण कर ले, हालत बदल जाएगी, मगर हमारा क्या है ?

पूछत हैं पथिक केते मारग ना धरें पग ।

प्रीतम के देश कैसे बातन से जाइए ॥

पूछने वाले सारे हैं, महाराज कैसे मिलता है, क्या करें, कैसे मन में शांति होगी ? यह है, वह है। पूछने वाले बड़े मिलेंगे मगर उस पर कदम रखने वाला ? कोई नहीं रखते। कहते हैं बातों से प्रभु को कैसे पा सकते हैं।

यह करनी का भेद है नहीं बुद्धि विचार ।

कथनी छांड करनी करो तो कुछ पावो सार ॥

इरादे हैं तो मंजिल के मगर चलना नहीं आता ।

हमें कहना तो आता है मगर करना नहीं आता ॥

यही कमी है। यह निहायत ज़रूरी है। मैंने अर्ज किया था कि परमात्मा की मिलना मुश्किल नहीं है, इंसान का बनना मुश्किल है। झूठ, फरेब, दगाबाजी, रियाकारी, एक के सामने कुछ, दूसरे के सामने कुछ, अंतर दिल में कुछ, बाहर कुछ। ज़ोम (अहंकार) में आया, जो बात नहीं हुई दूसरों को अपनी बड़ाई जताने के लिए, बढ़ाने के लिए सौ झूठ, फरेब, कपट, प्रापेगंडा

करते हैं। यह हालत दुनिया की बन रही है। आप सत्संग में आते हो, आने का मतलब यही है कि समझो। अगर आपके घर ठीक हो गए, तब तो ठीक, अगर वही चाल है :

वही है चाल बेदंगी जो आगे थी सो अब भी है।

फिर कैसे हो ! याद रखो, खुशक खेती तो पानी से हरी हो जाएगी। जो पानी से मारी जाएगी ? हमें बहुत कुछ आता है, बहुत कुछ दिल दिमाग में हमारे भरा हुआ है मगर अमल नहीं है। तो सवाल यह है कि अपने जीवन में धारण करना है। समझे ! तब काम बनेगा। पल्ले बांधो। आज बांधो, कल बांधो, परसों बांधो। नहीं तो याद रखो सत्संग में आने वाले सत्संग को बदनाम करते हो। यह मुझे कहना पड़ता है। मैं कई बार कहा करता हूँ, सत्संग के अंतर दाखिल होने से पहले दुनिया को छुट्टी कर दो। अंतर आते हुए किसी को द्वैत का आलम न हो। समझे ! एक प्रभु की याद, महापुरुषों की याद। अपने जीवन का रोना यही हो, कैसे हम बेहतर हो सकते हैं ? यहां आकर भी हम एक दूसरे का जैसे हाथ लगाकर मुक्ति होने का ख्याल है, यह सोलह आने (गलत है भई)। अगर खाली मंडल की वायु को भी आप पवित्र कर दो, कोई और ख्याल न करो, तो भी आने वाले का ख्याल टिकाव में आ जाए। तो यह निहायत जरूरी है। भई जो स्वामी जी ने कहा, उसके मैंने थोड़ा और वाजेह (स्पष्ट) तौर पर कह दिया। वही बात कही है। इसके बगैर काम नहीं बनेगा। इस वक्त मैंने ऐसे ही खोला था। शब्द आया था। यही ले लो। हमारा ही रोना उसमें भी है। कबीर साहब का शब्द है, गौर से सुनिए :

(1) बहु प्रपंच कर पर धन लियावे। सुत दारा पर आए लुटावे ॥

प्रपंच के माने बनावट, दिखावा और, ज़ाहिरदारी और, दरपर्दा और, यह कहना पड़ता है कि आज हम कुछ चीज़ खरीदते हैं तो खाने की चीज़ भी सही नहीं बिकती। नमक लो तो नमक साफ नहीं मिलता, मिर्च लो तो उसमें भी बेर कूटकर डाल देते हैं। काली मिर्च लो तो क्या होता है, पपीते के बीज डाल

देते हैं, आटे में पुरानी रोटियाँ सूखी पीसकर मिला देते हैं। दो, चार, छः महीने के बाद सोने का चूड़ा घर में चढ़ गया। कहां से आया भई ? देख लो ! खून निचुड़ा हुआ है। याद रखो, एक होता है individual (व्यक्तिगत) कर्म, एक होता है collective (समष्टियुक्त) कर्म ! Individual तो व्यक्ति को सहना पड़ता है, जो collective कर्म है, वह as a whole (सबको) सहना पड़ता है। आपको पता है पाकिस्तान क्यों बना ? मैं किसी और नज़र से देख रहा हूँ। एक पंजाबी, कोई हिंदू दुकानदारी करते दस बीस रूपए की, छः महीने में सैकड़ों वाला हो गया। उसके बाद हजारों वाला हो गया। कहां से आया ? वह खून निचुड़ा हुआ आ रहा है। जो इकट्ठा हुआ था, वह इकट्ठा कुएं की तरह बह गया, और क्या ! बड़ा जरूरी है कि प्रपंच को छोड़ो, झूठ फरेब, दगाबाजी, रियाकारी, कपट, जो हक है जरूर ले लो, अगर एक सूखी रोटी खा लो मैं आपको अर्ज करूं। कनक (गेहूँ) के एक दाने में हर एक किस्म की खुराक मौजूद है। कई भाइयों का ख्याल है कि आजकल खाना नहीं मिलता। मैं समझता हूँ आजकल इतना खाते हैं कि आगे नहीं मिलता था। आगे क्या मिलता था ? माफ करना एक बात थी, ब्रह्मचर्य की रक्षा थी। मैं आपको अर्ज करूं, मैंने अभी अपना जीवन बयान किया, कशमकश का ख्याल ही नहीं होता था। कोई हजारों में एकाध बिगड़ा हुआ हो तो अलहदा बात रही। मगर आम हालत मैं बयान कर रहा हूँ, खाना सादा, सुबह रोटी लस्सी ले ली, दाल से खाली। दिन को कुछ खाना पीना नहीं, शाम को बहुत कुछ हुआ तो चने, रात का खाना बस ! यह था आगे का। आजकल खाने को बहुत कुछ मिलता है भई। खाने का सवाल नहीं, क्वालिटी ठीक नहीं रही। ज़रूरत से ज्यादा खाते हैं। 'कम खुर्दन, कम खुफतन' समझे।

अलप आहार सुलप सी निद्रा दया छिमा तन प्रीत ।

सारे महापुरुष यही कहते हैं। भूख से कम खाओ। प्रपंच करके लाए। झूठ फरेब से। जिस ज़रिए से कमाओ, मैंने अभी कहा था ब्याहार शुद्ध हो, ब्याहार ही शुद्ध नहीं हमारा। कहां से रूपया आ गया माफ करना। आप ही

बताओ । जिसने दस या सौ रूपए की दुकान डाली है अगर छः महीने साल में वह हजारों का बन जाए । कहां से आया वह पैसा यह बताओ ! कितनी Income (आमदन) तुमको होगी ? रूपए में आना रख लो, दो आना रूपया रख लो । नहीं ! किसी को कम, किसी को बेशक । कहते हैं बड़े प्रपंच कर करके तुम लाते हो । किनके लिए ? बच्चों को पालने के लिए । हमारे बच्चे खूब खाएं, खूब पहनें, दूसरों के बच्चे बेशक भूखे मर जाएं । फिर कहते हैं इसका हश्र किसको भोगना पड़ेगा ? प्रपंच किया है न ! आगे इसका जवाब देंगे, गौर से सुनिए ।

(2) मन मेरे भूले कपट न कीजे । अंत निबेड़ा तेरे जिया पे लीजै ॥

कपट किया, महाराज हम रूपए मन लाए हैं, आपको चलो आना रूपया दे देंगे । लाया चाहे आठ आने मन हो । यह जो असल चीज़ है, असल घी है । बीच में मिलावट है । फिर ! देखो ईमानदारी से कितना पैसा आएगा ।

पापां बाझों होय ने कट्टी ते मोयाँ नाल न जाई ॥

बड़ी मोटी बात है । अगर लोग संयम का सही नज़री से करें तो बेर भी खाने को मिलेगा ?

खट्ट घाल किछ हत्थों दे, नानक राह पछाणे से ॥

ब्योहार शुद्ध होना चाहिए भई ! अंत फैसला किसको भोगना पड़ेगा भई । कहते हैं तुमको । "खावे गल्ला ते सोधे कल्ला ।" वाल्मिकी को कैसे होश आई थी, आपको पता है ? डाकू थे । जो भी मिलना उसको पकड़ लेना । लूट-खसूट कर लेनी । उसको फिर मार देना । ले जाना, घर वालों को पालना । एक दिन, एक संतजन चले गए । उसका वही रवैया था, चार बातें बनाकर उनसे भी वही करने लगा । कहने लगे, भई मेरी एक बात सुन लो, वह क्या ? कहने लगे, यह जो कुछ तू करता है, यह तो समझता है न कि यह जुल्म है । याद रखो पाप करने वाला भी जानता है मैं जो कुछ कर रहा हूँ जो बड़ी दरपर्दा पालिसी से कहो, वह कहता है वाह बड़ा सयाना है, बड़ा लायक लड़का पैदा

हो गया। कैसे भई ? देखो सैकड़ों पैसे आ गए, हजारों रूपए जमा हो गए। थोड़ी सी जगह थी, आज क्या बन गया मगर जब कोई पकड़ा जाए न, देखो न ! ऊपर से तो कहीं गलती हो गई, पकड़ी गई, उसकी फिर सजा हो गई, उसके लिए फिर भोग रखवाते हैं, पंडितों से जाप कराते हैं। अरे भई जो किया है, वह भोगो।

मेरा लड़का था। मैं आपको अर्ज करूँ मैं बड़ा सख्त, Strict था। वह यह कहता था कि मुझे मेरे पिता ने कभी नहीं कहा कि मैं तुम पर खुश हूँ। असिस्टेंट था सप्लाय के डिपार्टमेंट में। बंबई गया। वहाँ पर कुछ एक महीने में सारे जितने Contract थे, उनको Windup करना था। एक वह मुर्कर हुआ, दो और हुए। उसने तो ईमानदारी से सब फैसला किया और उन दोनों ने हजारों रूपए कमाए। मुझे चिट्ठी लिखी उसने कि मेरे साथी जो हैं उन्होंने हजारों रूपए बनाए हैं मगर मैंने एक पैसा भी नहीं बनाया, सच पर रहा। मैंने उसे लिखा कि तुम कहते थे सारी उम्र कि मैं तुम से खुश नहीं हूँ, यह कभी नहीं कहा। आज मैं लिखता हूँ कि मैं तुम पर खुश हूँ। हम बच्चों को देखते नहीं कि कहां से रूपया आता है। अरे रोको-रोको उनको। समझे ! हम खुद बिगाड़ते हैं।

तो महात्मा ने बल्मीकी डाकू से यही कहा कि भाई देखो जो तुम काम कर रहे हो, इसकी सजा तो तुमको भोगनी पड़ेगी। कहने लगा, नहीं महाराज जो खाते हैं, वह भी तो हिस्सा बांटेंगे। कि जाओ घर जाकर पूछ आओ, अगर वह बांटेंगे तो भी अच्छा है न ! कहने लगा, वाह वाह ! बड़ा चालाक आदमी निकला, मैं जाऊँ घर, यह जाए भाग। घर चला गया यह तो भाग सकता है न ! वह इसी नज़र से देख रहा था। कहने लगे, नहीं भाई, मैं भागता नहीं। रस्से से मुझे दरखत से बांध जाओ, घर से पूछ आओ। मैं भाग नहीं सकूँगा। फिर जो चाहे कर लेना। घर गया। कहने लगा, आप जानते हो मैं लोगों का गला काटता हूँ, खून निचोड़ता हूँ। नाजायज़ तरीके से पैसा कमाकर तुमको पालता हूँ। तुम इस पाप का कुछ हिस्सा बांटोगे ? कहने लगे, जी, हम क्यों

बाँटेंगे ? हमें तो रोटी चाहिए । जहां से मर्जी ला दो । बड़ा दिल पर असर हुआ । आकर कहता है, जी, वह तो यह कहते हैं वह नहीं बाँटेंगे । वह वाल्मिकी डाकू महर्षि बन गया । देखिए सब महापुरुषों ने इसी बात की तालीम दी है ।

जे रत्त लगे कपड़ा जामा होए पलीत ।

जो रत्त पीवें माणसा तिन क्योँ निर्मल चीत ॥

अगर खून लग जाए कपड़े को, कहते हैं पलीत हो गया, जो लोगों का खून निचुड़ा पी रहे हैं उनका दिल कैसे साफ होगा ?

नानक नाम खुदाए का दिल हच्छे मुख लहो ॥

अवर दिवाजे बुनी के झूठे अमल करेहो ॥

कि प्रभु का नाम लेना है तो दिल को साफ करके लो । दुनिया के लोग झूठे अमलों में लग रहे हैं । गुरु नानक साहब थे । मलक भागो था एक अमीर , उसने यज्ञ किया । गुरु नानक को भी बुलाया । वह गए तो सही, मगर यज्ञ में शामिल नहीं हुए । कहां ठहरे ? एक लालो तरखाण था, जो इतना गरीब था कि उसे एक अनाज की रोटी भी नसीब नहीं थी । सात अनाज इकट्ठे करके रोटी खाया करते थे । उसके घर रहे । समझे ! खैर दूसरे दिन पता चला कि गुरु नानक आए हैं । बुला भेजा, भाई आप आए नहीं । कहने लगे, 'नहीं मैं नहीं आया ।' कहने लगे कि कहां रहे ? कहने लगे कि मैं लालो तरखाण के यहां रहा । 'वहां क्या मिला, सूखी रोटी ?' कहने लगे कि हाँ । कहने लगे, 'यहाँ हलुए थे, पूड़े थे, माल पूड़े थे, यह थे वह थे ।' कहने लगे, 'मैं खून निचुड़ा हुआ कैसे खाता ?' मंगाया गया खाना । कि तुम भी लाओ । एक हाथ पर वह पकड़ा जो मलिक भागो का था खाना, तसमइयां भी थीं, हलुए और माल पूड़े भी थे, और दूसरे में सूखा टुकड़ा, वह जो लालो तरखाण का था । निचोड़ा तो लालो की रोटी से तो दूध के कतरे निकले और उससे खून के कतरे निकले । बात समझते हो, right earning जो है, यह पहला कदम है । आखिर जिनके लिए तुम करते हो, उसके तुम जिम्मेदार हो । न करो ।

मैं आपको कहूँ, पहले-पहले मैं नौकर हुआ। मिलिट्री वर्क्स M.E.S. में नौकर हुआ। वहाँ पर requisition ^{cheikh} clerk लगा रहा, यानी कि दो सौ के करीब जितने contract होते हैं वेह करने। मेरा यह कायदा था कि जो आज क्लेम आए दस, बीस, जो आज आए, आज पास कर दिए, जो कल आए, कल कर दिए। एक आया ठेकेदार। कहने लगा, जी, मेरा क्लेम आ रहा है, आज ही पास कर दो। मैंने कहा, जो आज आएंगे वेह कल पास होंगे, जो कल आएंगे वह परसों पास होंगे, क्योंकि शाम की डाक होंगे। उसने जाते हुए 2 रूपये मेरे कलदान के नीचे रख दिए। 1911 की बात है यह। मैंने कहा, यह क्या है? कहने लगा, कुछ नहीं, ज़रा जल्दी कर देना। मैंने कहा, भाई मुझे तनख्वाह मिलती है। उन दिनों में तीस रूपए बड़ी तनख्वाह होती थी। मुझे तनख्वाह इसी काम के लिए मिलती है। जो क्लेम आएंगे मैं पास कर दूंगा। मुझे यह हुक्म है। उसने सोचा शायद पैसे थोड़े हैं। एक रूपया और रख दिया। चांदी के रूपए थे। समझे। मैंने बहुतेरा यत्न किया उसको समझाने का, वह न माना, मैंने रूपए उठाके उसके पीछे फेंक दिए। चांदी के रूपए थे, वेह खड़के। सबकी आंखें खुल गईं। यह क्या हो गया! हमारे घर में शिकायत हुई, देखो भाई रूपया आता है, यह नहीं रखता। समझे! घर वालों ने कहा, भाई, तुमने रूपए वापस कर दिए? बड़े भाई भी थे वहाँ। वह बिल क्लर्क थे। खैर मैंने कहा, भाई मुझे तीस रूपए मिलते हैं, वह तीस के तीस तुम ले लो। मुझे बेशक एक पैसा भी खर्चने को न दो। इससे ज्यादा की उम्मीद न करो।

तो बात समझते हो! हर एक चीज़ का असर पड़ता है। हम परवाह नहीं करते। जहाँ मनो मून मैल जम रही है, और दो सेर जम गई तो क्या हो गया। समझे! आहार ^{अहार} ब्योहार! कहां से रूपया आता है? फिर आहार की क्वालिटी का फर्क पड़ता है। फिर आचार का फर्क पड़ता है। 1921 ई. की बात है, मैं फौज में अकाउंट्स आफिसर लगा और firing line में चला गया। वहाँ मुझे एक अर्दली दिया गया। तो अर्दली को मैंने यह कहा कि भाई देख तेरे

जीवन का तो मैं ठेकेदार नहीं बन सकता मगर इतनी बात जरूर याद रख, 1921 ई. की बात है, कि कम से कम यह कि जितनी देर बावर्चीखाने (रसोई) में बैठो कोई बात न करो, सिवाय यह कि सिमरन करते रहो या बाणी पढ़ते रहो। किसी को बावर्चीखाने में दाखिल होने नहीं दो ~~मैं~~। कहा, "बहुत अच्छा।" एक दिन, दो दिन तो ठीक रहा। तीसरे दिन रात को खाना खाया। एक बजा। असर तो पड़ना था ~~न~~। बुलाया एक बजे मैंने उसको। अरे भाई, "आज क्या बात कर रहे थे।" कहने लगा, "कुछ नहीं।" मैंने कहा, "तुम मुझे धोखा नहीं दे सकते।" फिर उसने इकरार किया कि वाकई कोई आदमी आया था, हम बातें कर रहे थे।

बात को समझते हो ? आज कल खाना पकता है, बीबियां खासकर ख्याल रखो, गालियां निकालती हैं, मर जा तू, भाई तू ऐसा हो जाए, यह है, वह है, हला-हला-हला मची पड़ी है। जो वह खाना खाएगा, किधर जाएगा भाई ? रोएगा कि नहीं ? मन कैसे खड़ा होगा ? मर्दों का यह काम है, ^{रोग} ~~ब्याहार~~ को शुद्ध करो, घरवाली को कह दो भाई हमारे पास यही कपड़ा है। रेशमी नहीं समझे ! फजूलखर्ची से बचो। घरवालियां कृपा करें, ^{सात्विक} ~~सात्विक~~ ख्याल में खाना पकाएं। जो खाए उसका भी ख्याल शुद्ध हो। सिखों के जमाने में यह आता था कि जो सिख के घर का खाना खा लेता था उसका ख्याल पलटा खा जाता था। क्यों न ख्याल पलटा खाए ? क्योंकि जो अंदर चीज़ जाएगी वैसा ही असर पैदा करेगी न ! मगर आखिर सोधना (भुगतना) किसको पड़ेगा ? "खावे गल्ला सोधे कल्ला।" बस। उनको भी शायद थोड़ा बहुत हिस्सा मिले न मिले, मगर उसको सारा ही भुगतना पड़ता है तकरीबन। यह कबीर साहब कह रहे हैं। महापुरुष तालीम तो दे देते हैं कि लोग और न करें मगर हम पढ़ छोड़ते हैं खाली।

~~मन~~ ^{मन} मेरे ^{अले} कपट न कीजे अंत निवेड़ा तेरे जिया पर लीजे ॥

शायद नौकरी पेशा तो बच सकता है, मगर दुकानदार कहते हैं, जी हमारा गुजारा नहीं होता। उनको, मैं कइयों को कहता हूँ कि भाई तुम एक जायज़

फायदा रख लो। उससे बदलो नहीं। पहले महीना, दो महीना गड़बड़ होगी, जब तज़रबा होगा तो सारे ग्राहक तुम्हारे पास आएंगे बगैर पूछे के, सौदा लेने के लिए। होता है ऐसे ही। ग्राहक सुनते रहते हैं न दूर से, यह दो रूपए का देते हैं, डेढ़ पौने दो कम दे देंगे, डेढ़ उधर देता है उधर दो रूपए। एक और कपड़े में ले लेता है। वह खुश हो गया, जी वह कपड़ा बड़ा सस्ता आया। अगर एक आदमी एक से एक बार, दो बार धोखा खाएगा, तीसरी चौथी बार पूछेगा भी नहीं।

हरि गोकल की दुकान थी लाहौर में। उसका एक भाव था। बच्चा आए, बूढ़ा आए, एक भाव। कोई भी जाए, भाई पाँच सेर दे दो, एक सेर दे दो, पाव, आधी छातंक। कोई पूछता नहीं था कि क्या भाव है। यह है। सबकी दुविधा हटी। अमेरिका में जाओ, वहां दुकानें लगी पड़ी हैं। लंबी-लंबी दुकानें लगी पड़ी हैं फल की या और किसी चीज़ की। आप जाओ, जो मर्जी आए उठा लो। अपनी टोकरी में उठाकर आ गए। यह नहीं पूछते कि क्या लाए हो? कि क्या-क्या लिया भाई? इतना फलाना, इतना फलाना। वह गिनते नहीं। बिल बना दिया, जाओ वहां दे आओ। यहां क्या करते हैं? ज़रा नज़र ओहले हुई तो कम तोल देंगे, गिनने वाला गिनते ही, लो जी, एक ज्यादा आप ले लेगा। कितनी मुसीबत है? आखिर लोग जो तरक्की कर रहे हैं, उनका कोई असूल है न। बड़ा आया, कुछ और भाव लो, छोटा आया लूट लो। तीसरे को कुछ और ही दे दो। यह हालत हो रही है। अब जब तक ब्योहार शुद्ध नहीं, हालत अच्छी नहीं हो सकती है। फिर आहार की क्वालिटी ठीक हो, फिर आचार हो। जिसके पास, हाथों से गुज़रती है यह निहायत जरूरी है। मगर इस तरफ हम तवज्जो नहीं करते हैं। तो कहते हैं, कपट न करो। दिल में कुछ और ऊपर कुछ और, बतलाते कुछ और, आगे और, पीछे कुछ और। किसलिए इकट्ठे करते हो? माफ करना, कौन सज़ा भुगतेगा? अगर यहां गर्वनमेंट है तो उसकी भी तो गर्वनमेंट है, अभी स्वामी जी ने कहा है। भुगतना पड़ेगा भाई।

3) छिन-छिन तन छीजे जरा जनावे । तब तेरी ओक कोई पानीओ न पावे ॥

यह शरीर जिसको पाल रहे हो तुम, यह क्षण क्षण क्षीण हो रहा है । ऐसा समय आ जाएगा कि कोई तुम्हें पूछेगा भी नहीं । जब तुम लाचार हो जाओगे, निर्बल हो जाओगे, कौन पूछेगा ? कोई पानी भी नहीं पूछेगा । हम यह नहीं समझते कि सबके अंतर आत्मा है । सबके अंतर परमात्मा है । We are all brothers and sisters in God. हम केवल अपनी गर्ज को समझते हैं कि इससे क्या मिलता है ? माता और पिता ने जिन्होंने अपने मुंह से ग्राहियां (ग्रास) अपने मुंह से निकालकर बच्चे को पाला, आज हम यह देख रहे हैं कि वह उनको रोटी खाने को नहीं मिलती है । मेरे पास आते हैं, रोते आते हैं । फिर बताओ क्या हश्र है ? पेशावर में एक खान बहादुर था । उसके पास एक माता ने जाकर शिकायत की कि मेरा लड़का मुझे खाने को नहीं देता । कहने लगा, "अच्छी बात ।" उसको बुलाया । क्या किया, उसमें पेट के साथ एक रेत का घड़ा भरकर बांध दिया, सुबह से शाम तक फिरते रहो । कितनी बार फिरे ? एक चक्कर लगाया, दो चक्कर लगाए, भई मेरी तोबा, मैं जरूर खिलाऊंगा । अरे भई, जिस माता ने तुमको नौ महीने तक अपने पेट में रखा उसका एहसान तुम भूल सकते हो ? जिस पिता ने अपने मुंह से ग्रास निकालकर तुमको खिलाया है, मुसीबतें झेलीं, उनकी सेवा करना क्या तुम्हारा हक नहीं ? यह सारी बातें परमार्थ में असर करती है भई । जिसको तुम पाना चाहते हो वह उनमें भी है और उनके तुम एहसासमंद हो, फिर भी तुम उनको नहीं पूछते, तो वह प्रभु कैसे मिलेगा ? उनकी बददुआएं लेते हो :

जे तो पिया मिलण दी सिक्क तां हिया ना ठाहीं केही दा ।

यह आचार है । तो बड़े प्यार से समझाते हैं, क्या ? कि क्षण-क्षण यह तन छीजे रहा है । ऐसा समय आ जाएगा कि तुम लाचार हो जाओगे । फिर किसके लिए कर रहे हो ? जिनके लिए कर रहे हो, वही तुम्हें पूछेंगे नहीं । देख लो । यही हालत है । बहुत कृपा करें तो क्या करते हैं । टूटी चारपाई दे देते हैं, बाहर दालान या ड्योदी पर लिटा देते हैं, लेटे रहो । सोटा हाथ में दे

देते हैं कि कुत्ते हांकते जाओ और पोते खिलाते जाओ। कोई चीज़ मांगे, जी आया, दिया-दिया, न दिया। तो उल्लुओं का सा बिट-बिट देखता है। यह हालत है। यह हथ्र है इंसान का। यह किनको बातें सुनाई जाती हैं? हम लोगों को। हमारी कहानी है। हमारी नंगी तस्वीर है, दूसरे पहलू की, जिसकी तरफ हमने कभी ध्यान नहीं दिया। और ऐसे पुरूषों को प्रभु कैसे मिल सकता है? समझे!

(4) कहत कबीर कोई न तेरा हृदय राम को न जपहि सबेरा।

कबीर साहब कहते हैं, अरे भई दुनिया में सच्चा हमदर्दी कोई नहीं, तू प्रभु की याद कर जो कि तेरा संगी और साथी है। समझे! बाकी सब लेने-देने के सामान हैं। प्रारब्ध कर्मों के अनुसार लेना-देना खत्म होता है। जब होता है तो सबको जाना पड़ता है। तो परमात्मा को याद करोगे तो आत्मा को खुराक मिलेगी। तो वह कहाँ होता है? परमात्मा की प्राप्ति कहाँ होती है?

संत जनों मिल भाइयों सच्चा नाम संभाल।
तोड़ा बांधो जिया का एत्थे ओटथे नाल ॥

दोनों जगह में तुम सुखी हो जाओगे। इस दुनिया में भी, अगली में भी। तो कहते हैं भई देख, आते हुए यह जिस्म साथ आता है, यह भी साथ नहीं जाता। अरे भई जिनके लिए तू प्रपंच करता है — नेक नीयत से बच्चों को पालो। यह नहीं मतलब कि नहीं पालो। स्त्री को पालो, बच्चों को पालो। रहो दुनिया में मगर संयम का जीवन बनाओ और आदर्श को भूलो नहीं। आदर्श आखिर मनुष्य जीवन पाने का क्या है कि आत्मा प्रभु से जुड़े। जो जुड़ गए हैं उनकी सोहबत करो और संयम का जीवन बनाओ। मैंने इसीलिए कहा था कि प्रभु का पाना मुश्किल नहीं है, इंसान का बनना मुश्किल है। जितने दुख दुनिया में बढ़ रहे हैं, यह कचहरियां जो भर रहीं हैं, किस लिए भर रही हैं? इसीलिए कि एक-दूसरे के हक मारे, एक-दूसरे का खून निचोड़ेगा, उसको साबत (सिद्ध) करने के लिए सौ झूठ, सौ फरेब, सौ प्रापेगंडा और करता है। फिर क्या करें?

मैं अपने घर की बात बतलाता हूँ। हमारे घर में एक मुकद्दमा हुआ। बड़ी मुद्दत हो गई, मैं छोटा सा था 1916-17 की बात है, एक मुकद्दमा था, हमारे घरवालों ने जीत लिया, दूसरे हार गए। वह आदमी आया। मैंने अपने पिता से पूछा कि भई मुकद्दमा आप जीत गए, आप जानो क्या इनका कोई हक है आपके ख्याल में? बड़े लोग बड़े सच्चे होते हैं। हाँ भई मैं जानता हूँ कि हक इनका जरूर है। समझे! खैर याद रखो कचहरियों में सारा सच नहीं हो सकता है। झूठ वाले जीत जाते हैं, कई सच वाले हार जाते हैं। जितने चालाकी, जितने झूठ फरेब की शहादतें ^(जवाबियाँ) कर दो, जीत जाएगा, सचवाला कभी जीत नहीं सकता। कहने लगे, हक इनका जरूर है। मैंने कहा, कितना हक समझते हो?" ज़मीन का कुछ हिस्सा था जिस पर मुकद्दमा चल रहा था। उससे दूसरे ने पूछा, क्या हक समझते हो? कहने लगा, जी पंद्रह कनाल। उनसे (पिता से) पूछा, कहने लगे, नौ कनाल इनका हक है। मैंने कहा, अच्छा साढ़े बारह कनाल पर फैसला करो। मुकद्दमा जीता और साढ़े बारह कनाल ज़मीन दे दी। अब तक वह एहसान समझते हैं। बात समझे! हम घरों के झगड़ों का आप फैसला कर लें, वह अच्छा कि मुकद्दमों में जाओ।

क्राइस्ट ने तो यह कहा कि घर से नहीं निकलो मुकद्दमे के लिए। घर से निकल पड़े हो तो रास्ते से वापस आ जाओ। रास्ते से भी नहीं आए तो कचहरी का दरवाजा आ गया तो उसमें खड़े हो जाओ, अंदर पाँव नहीं रखो। अंदर पाँव रखोगे तो तुम्हारी दाढ़ी दूसरे के हाथ। सौ झूठ, सौ फरेब, उसी को साबित करने के लिए। बात तो यह है। तो कहते हैं, भई तेरा कौन साथी है? किसके लिए इतने झगड़े कर रहा है? अंत में फैसला तो तेरी जान पर होना है। कोई ऐसा काम न कर जिसके करने से तुझे पछताना पड़े। दो खुशी से, सेवा जो हाज़िर है, पेश कर दो। इसमें भी मैं आपको अर्ज़ करूँ, स्त्रियाँ ज्यादा काम कर सकती हैं।

मर्दों का काम यह है कि व्यवहार शुद्ध करें, स्त्रियों का काम है दो। वह होम मिनिस्टर हैं। मैं आपको होम मिनिस्टर बनाता हूँ। आप जितने पैसे हों उसी में गुज़ारा करो, अपने घर को भी पालो, उससे दूसरों का भी कुछ हिस्सा

रख लो । समझे ! खर्च कम कर लो । सादा कपड़े पहन लो, सादा जीवन बना लो । घरवालों को कभी तंगी न हो । हम घरवालों को मजबूर करते हैं, जरूर लाओ, यह लाओ, वह लाओ । वह बेचारा क्या करे ? गला काटता है दुनिया का । घरवालियों को खुश जो करना है । मैं बेलिहाज़ प्यार से कह रहा हूँ कि बहुत सारा हिस्सा important ^(मुझे) हमारा होम मिनिस्टर जो है न, वह ठीक हो जाये तो मर्द भी शायद कुछ मजबूरी से शायद न गला काटे । लोगों की बात तो यह है ।

एक बार मैं ऐसे डिपार्टमेंट में लग गया था जहां से पहले वालों ने कई मकान बनाए थे । समझे ! local purchase (लोकल खरीद) थीं । उसमें जितना मर्जी है पैसों का रेट लगाओ और ले लो । उसमें कई हजार रूपए की हर महीने में purchases (खरीद) होती थी । उसने (मुझे) से पहले जो था बड़े भारी मकान बनाए । मुझे वहां पर लगाया गया । मैंने सहज ही घरवाली से पूछा, "क्यों भई मकान वकान बन सकता है, तेरा क्या ख्याल है ? सिर्फ टेस्ट करने के लिए ।" कहने लगी, "हमें मकान नहीं चाहिए ।" तो बहुत सारा हक दूसरों का हो सकता है बीच में । समझे ! जो चीज़ें खरीदनी उसका sample लाना, उसका less Commission (कमीशन काटकर) कि भई मुझे रेट दे दो । अफसर के सामने पेश करना भई ढूंढ लो जो मर्जी है । चुन लो जो मर्जी है । यह था मेरा कायदा । तो मेरा कहने का मतलब है बहुत सारा हिस्सा दोनों मिलकर ही कर सकते हैं । मर्दों का अपना काम, स्त्रियों का अपना काम । खाना खूब शांति से पकाओ, खुशी से खिलाओ । खाने वाले का भी खून बढ़े, क्वालिटी से, क्वैटिटी से नहीं । साफदिली और प्यार से जो खाना खिलाया जाए वह खून बढ़ाता है, वैसा ही असर पैदा करता है । जैसे हाथों से चीज़ गुज़रेगी वैसा ही असर आएगा । यह छोटी-छोटी चीज़ें हैं जिन पर हम ध्यान नहीं देते इस खातिर बनता कुछ नहीं, बनता भी है तो बिगड़ जाता है ।

संतह मन पवन सुख बसेया किछ जोग परापत गणेया ॥

कहते हैं, यह मन हवा की तरह भाग जाने वाला है । अगर इसको काबू

करो, सुखी हो जाओ । समझे !

मन जीते जग जीत ।

तो मन के फैलाव से हटने की बात है । कहां फैलाव है ? इंद्रियों के घाट पर, या इंद्रियों के भोग खींचते हैं और मन के साथ आत्मा जीव बना बैठी है । यह खिंचा फिर रहा है, पवन की तरह । जैसे यह बाहर भटक रहा है, खिंचा जा रहा है, इसको जरा संयम में ले आओ, सुखी हो जाओगे । जिसका मन सुखी उसका सब कुछ सुखी । क्यों जी ! कहते हैं यह कैसे होगा ? कहते हैं, कुछ योग की युक्ति धारण करो । योग किसको कहते हैं ?

योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः

चित्त की यह वृत्तियां जितनी फैलाव में हैं, ³⁷ ~~उसको~~ निरोध कर लो । इसका नाम है योग । यह कैसे हो ? सवाल यह रह गया न ! यह तो हो गया व्यवहार के मुतल्लिक, आहार और आचार के मुतल्लिक । अब जो चीज़ मिलनी है, उसका जिक्र आगे है । योग युक्ति के बगैर प्रभु नहीं मिलता । उसका पहला कदम क्या है, कि चित्त वृत्तियों का निरोध, जिसकी खुल्लम-खुल्ला, क्या कहते हैं, शूतर बेमुहार की तरह बागें खोल रखी हैं, इंद्रियों की, वह कैसे प्रभु को पा सकता है ? प्रभु तो तुम्हारी आत्मा की आत्मा है । जो बाहर फैलाव में जा रहा है, वह क्या लेगा ?

नौ घर देख जो कामण भूली वस्तु अनूप न पाई ॥

नौ घरों को देखकर जो रूह रूपी स्त्री बाहर भटक रही है, खिंची जा रही है, इसके अंतर जो ^{न्यवे} अनूप वस्तु है, उसको कैसे पा सकती है ? पहले यह चीज़ें, ज़मीन बनाओ, ^{न्यवे} ब्योहार शुद्ध, आहार शुद्ध, आचार शुद्ध, फिर यह जो इंद्रियों की बेलगाम बागें खोल रखी हैं न, थोड़ा संयम में लाओ । अब आप देखेंगे जो स्वामी जी ने अभी कहा न, सिनेमा न देखो, मैं तो कहता हूं, जब्त रखो । आगे ही भागे जा रही हैं (इंद्रियां) और उभार मिलता है । नाचते हैं सब । तो कहते हैं, अब योग की युक्ति कहां से मिलेगी, कैसे चित्त वृत्तियों का निरोध

हो ? इस मन के तालाब में कैसे लहरें उठती हैं ?

महात्मा बड़े scientific way (साईंस के तौर पर) में चीज़ को पेश करते हैं। एक तालाब हो। उसमें कुछ सुराख हों, उसमें हवा बाहर से आ रही हो तो पानी में हिलोरें उठेंगी कि नहीं ? अगर वह सुराख बंद कर दो, पानी खड़ा हो जाएगा। उसमें तुम अपनी शकल देख सकोगे। बात समझे ! तो मन रूपी तालाब, हृदय का reservoir कहो, sub-conscious जो है, उससे बाहर से संस्कार आ रहे हैं, इंद्रियों के घाट से। आंखों की इंद्रि से अस्सी फीसदी संस्कार आते हैं, कानों की इंद्रि से चौदह फीसदी संस्कार आते हैं, हिसाबदानों के हिसाब के मुताबिक। बाकी इंद्रियों से बाकी। तो हर वक्त इसमें संस्कार की हिलोरें उठ रही हैं, मन रूपी reservoir में। वहां झलक कैसे आए ?

इसलिए कहा कि इंद्रियां दमन हों, मन खड़ा हो और बुद्धि भी स्थिर हो, तब आत्मा का साक्षात्कार हो। समझ आई अब आपको। अरे भई बड़ा नाजुक मामला है यह, याद रखो। यह बात नहीं कि खाओ, पियो और मजे करो। नहीं, ^(दमन) खांडे की धार पर जाना पड़ता है। ज़रा बिगड़े नहीं कि हालत बिगड़ी नहीं। डायरी रखने का मतलब क्या है भई ? बनी बनाई पर अगर थोड़े भी वेग खुल गए, फिर नुकसान। कहते हैं, पहले बनता था, अब नहीं बनता। अरे दो चार, दस दिन, बीस दिन करते तो बनने लग जाता। अरे भई, बात तो यही है। डायरी बड़ी ज़रूरी है। Self-introspection (जीवन की पड़ताल) तुमको हर एक मिनट, दिन का किया सामने रहता है। तो कहते हैं, अगर योग की युक्ति थोड़ी धारण कर लो, यह मन जो पवन की तरह भागता फिरता है न, यह सुखी हो जाता है, खड़ा हो जाता है। मन को लज्जत चाहिए, बाहर भी हम लज्जत ढूंढते हैं न। लज्जत दो चीज़ों में तकसीम हो जाती है, एक लाइट, एक आवाज़। खूबसूरती, अच्छे नज़ारे मन को खींच लेते हैं, और सुरिली धुनें, अभी आवाज़ आए सबकी सुरत खिंच जाएगी, मन खिंच जाएगा। तो अंतर में दोनों ही हैं। ऊपर कहा न, कुछ नाम से लगे, पिंड से ऊपर जाओ, स्थूल से ऊपर सूक्ष्म ज्यादा खूबसूरत है, सूक्ष्म से कारण ज्यादा

खूबसूरत है, कारण से महाकारण, पारब्रह्मंड ज्यादा खूबसूरत है। मगर हमें उसका तज़रबा कोई नहीं। महात्मा कहते हैं, बाहर से अंतर्मुख हो, (invert करो), इंद्रियों से ऊपर आओ, मन को सुख होगा। मोटी बात मैं आपको अर्ज करूँ, जैसे धूप से झुलसा हुआ इंसान एक सायादार दरख्त के नीचे आ जाए, होश आ जाती है कि नहीं? अगर वृत्तियों को बाहर फैलाव से हटाकर यहां अंतर दो भूमध्य खड़े हो, ठंडक आने लगेगी। यहीं से क, ख, शुरू होती है परमार्थ की। इंद्रियों को यहीं से ताकत मिलती है। समझे! तो कहते हैं योग की युक्ति अख्तियार करो। अब मन की हिलोरें कहां से आती हैं? उसका आगे बयान करेंगे। गौर से सुनो क्या कहते हैं।

गुरु दिखलाई मोरी जित मिरग पड़त है चोरी ॥

कहते हैं जब गुरु के पास जाते हो, वह तुम्हें बतलाता है कि कहां से तुम लूटे जा रहे हो। यह इंद्रियों की मोरियां हैं, जहां से तुम लूटे जा रहे हो। बाहर से संस्कार आते हैं, तुम्हारे हृदय का reservoir भर रहा है। वह खाली हो तो वहां कोई और बैठे न! बात तो यह है। कहते हैं यह है, जहां से संस्कार आते हैं। अगर मोरियों को बंद कर दो, हिलोरें नहीं उठेंगी न, संस्कार नहीं आएंगे, हिलोरें नहीं उठेंगी। अगली जो मैल है, उसका तो सामान हो सकता है। अगर मैल भरा हो, उसमें अगर हिलोरें भी उठती हों बाहर से, हवा आने से, अगर बाहर से हवा आनी बंद हो जाए तो पानी खड़ा हो न! तो पानी में मैल भरा है। अगर उसमें थोड़ी फटकड़ी डाल दो तो मैल कट जाएगी कि नहीं? उसमें अपनी शकल देख सकते हो अगर बाहर से संस्कार जो आते हैं, आने बंद हो जाएं। वह कैसे हो? वह कैसे होगा? यह इंद्रियां, जहां से तुम लूटे जा रहे हो, बाहर से संस्कार आते हैं, मन में हिलोरें पैदा करते हैं, इसमें वृत्तियां उठती हैं, उनको बंद करो।

गुरु दिखलाई मोरी जित मिरग पड़त है चोरी ॥

कैसे बंद करो? आगे कहते हैं। सुनिए :

मूँद लिए दरवाजे बाज लिए अनहद बाजे ॥

वह हमें बतलाते हैं कैसे मोरियों को बंद कर सकते हैं, कैसे अंतर्मुख हो सकते हैं, कैसे इंद्रियों के घाट से ऊपर जाते हैं। यह योग की युक्ति है। वह बिठाकर तुमको experience (अनुभव) देता है, how to do it? समझे! "नौ घर देख जो कामण भूल", मैंने अभी अर्ज किया था। फिर कहा गुरु अमरदास जी ने :

नौ दर ठाके धावत रहाए दसवें निज घर बासा पाए ॥

नौ दरवाजे तो खुले हैं, दो आंखों के, दो नासिका के, दो कान, मुंह, गुदा और इंद्रि। कहते हैं, इसमें एक और दसवां द्वार भी है, जो गुप्त है।

नौ दरवाजे प्रगट किए दसवां गुप्त रहाया ॥

वह दरवाजा जो पिंड से अंड, ब्रह्मंड में खुलता है न, वह दो भ्रूमध्य पीछे है। भगवान कृष्ण जी ने गीता में इसका इशारा दिया है।

अंधे दर की खबर न पाई ॥

आंख जिसकी नहीं खुली, इस दर का उसे पता नहीं। अनुभवी पुरुष तुमको बिठाता है यहां, दरवाजा खोल देता है, खुलता है, रूह ऊपर आ जाती है। ऊपर से वह पहले यकसूई (एकाग्रता) में आनंद, फिर ऊपर से नामधारा, ज्योति का विकास होता है।

नाम जपत कोट सूर उजेयारा ॥

परमात्मा ज्योतिस्वरूप है। ज्योति का विकास होने लगता है। उसमें ठंडक मिलती है। अंतर में प्रणव की ध्वनि या नाद जारी हो जाता है। ज्योति और नाद। ज्योति मार्ग और श्रुति मार्ग। यहां से, इंद्रियों के घाट से ऊपर, यह मंजिल शुरू होती है। इन पर सवार होकर कहां पहुंचते हैं? अनाम और अशब्द में। जो बाहर फैलाव में है, वह यहां ठहर कैसे सकता है? बात समझे मेरी? एक बच्चा हो। उसको अगर अंधेरी कोठड़ी में बंद कर दो, वह क्या

करेगा ? चीखेगा, पुकारेगा, दरवाजे तोड़ेगा । अगर अंतर कोई दिलकश (दिल लुभाने वाली) चीज़ खड़े होने को मिल जाए तो चुपकर रहेगा कि नहीं ? तो गुरु कैसे इंद्रियों को दमन करना सिखाता है ? बिठाकर अंतर ज्योति की थोड़ी पूंजी दे देता है और प्रणव की ध्वनि से जोड़ देता है । उसमें लज्जत है, महारस है । समझे ! उसको पाकर मन खड़ा हो जाता है । फिर बाहर आने को भटकता नहीं । अब तो बाहर से हटना नहीं चाहता, फिर उस रस को पाकर इसको खींच-खींचकर बाहर लाओ तो बाहर नहीं आना चाहता ।

भगवान कृष्ण जी के जीवन में आता है कि उन्होंने यमुना दरिया में छलांग मारी । नीचे हज़ार मुंह वाला साँप था । बांसुरी बजाते हुए उसका नथन किया है । अरे प्रणव की ध्वनि से । यह हज़ार मुंह वाला साँप कौन सा है ? यह मन है, घट-घट में बैठा है । हज़ारों तरीकों से ज़हर चढ़ाता है । इसको काबू करने का इलाज केवल नाम की ध्वनि है । वह कब मिलती है ? जब चित्तवृत्तियों का थोड़ा निरोध हो, अंतर में खड़े हो, इंद्रियों के घाट से ऊपर आओ । आप आ सकते हो तो आ जाइए, बड़ी खुशी की बात है । न आ सको तो किसी की मदद ले लो :

खेंचे सुरत गुरु बलवान । बिख दुविधा काढ कढीजे ॥

इसके साथ लगने से मन खड़ा हो जाता है, और कोई तरीका नहीं ।

नाम मिलिए मन तृपतिए ।

तो यही मुश्किल है, जो इन इंद्रियों को, क्या कहते हैं, खुली मुहारे दे रहे हैं, उनका कैसे बनेगा भाई ? जीवन बरबाद जा रहा है ।

पौड़ी छुटकी फिर हाथ न आवे, ऐहला जन्म गंवाया ॥

महात्मा यह नहीं कहते कि खाना न खाओ । खाओ, संयम का खाओ । खाना हमारे लिए बना है, हम खाने के लिए नहीं बने हैं । इतना खाओ जितना जरूरत है । कपड़ा जिस्म को ढांकने के लिए बना है । विषय विकारों को

भड़काओ नहीं। एक तो पैसा ज्यादा लगेगा, दूसरों को भी जीवन का असर होगा। माफ करना, एक सादा आदमी जाएगा तो उस पर कोई नज़र भी नहीं करता। एक बना तना जा रहा है, सबकी नज़र उस पर है। सबका बेड़ा गर्क हो रहा है, साथ उसका भी अपना तो है ही। बन ठनकर जा रहा है। बात समझिए। छोटी छोटी बातों का बड़ा भारी असर है भाई। इसलिए संयम का जीवन चाहिए। रहो दुनिया में, बाल बच्चों को पालो, नेक नीयती से कमाई करो, सादा जीवन हो। Simple living and high thinking. तुम्हारा बेड़ा पार हो जाएगा। इसके बगैर काम नहीं बनेगा।

पहले ज़माने में, याद हो कि महात्मा लोग पहले पात्र बनाकर कुछ दिया करते थे। बुखारे का बादशाह था, इब्राहिम। गया कबीर साहब के पास। कहते हैं कुछ वर्ष सेवा करता रहा बड़े प्यार से। तो घरवाली कहने लगी, माता लोई, कि बड़ा अच्छा बादशाह है। बड़ा गरीब है, बड़ा अच्छा बन गया है। इसको कुछ देना चाहिए। तो कबीर साहब ने कहा कि अभी बना नहीं, बर्तन अभी इसका बना नहीं है। कहने लगी, कैसे? कितना आज्ञाकारी है, कभी ना नहीं करता, सब काम करता है। कहने लगे, जब यह बाहर गुज़रे न, तूने इसके ऊपर एक कूड़े कर्कट की टोकरी फेंक देना और छिपकर सुनना कि वह क्या कहता है? बुखारे का बादशाह था। जब ऊपर से कूड़ा करकट फेंका गया तो कहा कि बुखारा होता तो मैं क्या करता! अभी दिल से बुखारे की बादशाही निकली नहीं। फिर और मुदत गुज़र गई तो कबीर साहब कहने लगे, अब बर्तन बन गया। कि महाराज हमें तो कुछ नज़र नहीं आता, यह वैसा ही है जैस पहले था। कहने लगे, अब ऐसा करो, पहले तो कूड़ा करकट फेंका था, अब पेशाब गंदगी घोलकर इसके सिर पर डालो, फिर सुनना वह क्या कहता है? जब ऐसा ही किया तो कहने लगा कि हे प्रभु! मैं तो इससे भी गया गुज़रा हूं।

बात समझे! बनने में वक्त लगता है भाई। बारह बाहर वर्ष जो पानी ढोते रहे उसका कुछ मतलब था! आजकल ज़माने बदल गए हैं। किसी को एक

बार झिड़को तो वह नज़दीक नहीं आता है। समझे ! किसी को, न आओ तो वह ऐसा समझता है, देखो हम आए तो वह बैठे नहीं। समझे ! तो आज यह है। महापुरुषों की कृपा समझो या भाई मंझ की कृपा, मैं तो यह कहूंगा। उसने यह वर मांगा कि आगे इम्तिहान न लिया जाए। आज स्कूल में दाखिल कर लेते हैं, साथ बनाने का काम भी, साथ ही देने का काम भी। नाम भी देते हैं, बनाने के लिए, जीवन बना लो। यह दोनों काम करने पड़ते हैं। तो असल चीज़ आपके अंतर में है। वह देना उनके एक इशारे पर है। आगे लेने वाला ही न हो, बर्तन ही न हो ! फिर भी ऐसी हालत है कि दे देते हैं पहले ही दिन, बर्तन नहीं बना तो भी दे देते हैं, मगर आगे के लिए संभलो, होश में आ जाओ। तो बड़े प्यार से समझा रहे है कि, “गुरु दिखलाई मोरी जित मिरग पड़त हैं चोरी। मूंद लिए दरवाजे तां बाजलिए अनहद बाजे।” क्या, ध्वनि जारी हो जाए। उस ध्वनि से मन काबू आ जाएगा।

राम नाम कीर्तन रतन वत्थ हर साधु पास रखीजे ॥

उस रमे हुए नाम में कीर्तन हो रहा है। समझे ! उसकी रत्नों जैसी पूंजी हरि ने साधु के पास रखी है।

जो वचन गुरु सत सत कर माने तिस आगे काढ धरीजे ।

इवम ब्रह्म करके दे देता है। यह लो। मगर उस पूंजी को संभालने के लिए नेक पाक जीवन चाहिए। Take heed that the light which is in thee be not darkness. खबरदार रहो, पूंजी जो मिली है, उसमें स्याही का पर्दा न फिर जाए। जो उसकी कद्र कर रहे हैं वह विषय विकारों में कभी गिरेंगे ? गिरेंगे तो रोएंगे, महाराज ! अब आगे नहीं करेंगे। बात समझे, क्या है ? यह है inner way (अंतरीय मार्ग) इसके लिये संयम का जीवन चाहिए। बड़ी मोटी बात। इसको सदाचारी जीवन कह लो। इसको किसी नाम से अदा कर लो। तो ब्रह्मचर्य के लफ्जी माने आप समझे ? ब्रह्म की प्राप्ति के लिए जो आचरण का धारण करना है, उसका नाम ब्रह्मचर्य है। उसमें जो चीजें मददगार

हैं, वह सब ब्रह्मचर्य में दाखिल हैं। खाली Passions (काम) का रोकना ही नहीं, बल्कि हर एक इंद्रि पर कंट्रोल करने का नाम है ब्रह्मचर्य। गुरबाणी में आता है, "तग न नारी तग न इंद्री।" न आंखों पर, न कानों पर कब्जा है, न ज़बान पर है, न नासिका पर है। पांच इंद्रियां हैं जिन पर इंसान लूटा जा रहा है। उनको संयम में लाना है। अंतर्मुख कोई चीज़ ज्यादा महारस मिल जाए तो बाहरी रस अपने आप घट जाएंगे।

कुंभ कमल जल भरेया, जल मेटेया ऊमा करेया ॥

बर्तन उल्टा है। अंतर कमल खिल रहा है। इसमें खाहिशात (इच्छाओं) का पानी भर रहा है। कब यह खाहिशात का पानी निकलेगा? यह क्यों बढ़ता है? यह तो हुआ न बाहर की तरफ, अगर यह अंतर्मुख हो जाए? याद रखो हमारी इंद्रियां ऐसी खिड़कियां हैं, दरवाजे हैं, जो बाहर खुलते हैं, अंतर नहीं खुलते। महात्मा इसको अंतर खोलना बतलाते हैं। कहते हैं बाहर भी सुनो, अंतर भी सुनो। तो अंतर्मुख जब करता है तो कमल सीधा हो गया न, अमृत से भर जाएगा। बाहर का जितना खाहिशात (इच्छाओं) का पानी है, वह निकल जाता है, सूख जाता है और वह अमृत से भर जाता है। कोई करे ए.बी. करे, सी करे। किसी समाज में रहकर करो। समाजों का ताल्लुक आपकी इंद्रियों के घाट से है। जब आप इंद्रियों के घाट से ऊपर आ गए, आपकी कौन सी समाज रह गई भई? इसलिए संतों का उपदेश सब के लिए है।

महापुरुष साखी बोलदे सांझी सकल जहाने ॥

यह Astral side है, यह इल्मे-सीना है, inner way up है। मैं जब अमेरिका गया था तो एक दफा शिकागो से कैलीफोर्निया को जा रहा था। इसी ड्रेस में मैं था। मेरी यह ड्रेस (शलवार-कमीज़) देखकर सब आए कि ऑटोग्राफ (हस्ताक्षर) दो। एक old lady (बूढ़ी औरत) आई मेरे पास, कहने लगी, ऑटोग्राफ दो, मगर कुछ लिखकर दो। तो मैंने लिख दिया, क्राईस्ट का कथन है जो, It is better to enter the world with one eye rather than

the other two which casteth thee to hell दो की बजाय एक आंख से दुनिया में दाखिल होना अच्छा है। अगर दो से दाखिल होंगे तो नर्कों की सजा भुगतोगे। समझे ! एक आंख कब बनती है ? जब अंतर्मुख हो, जिसको दिव्यचक्षु कहते हैं। दो आंखों से बाहरी संस्कार आ आकर भरे जाते हैं, नर्कों में जाने का सामान बनता है। बात वह समझी नहीं। वह बड़ी हैरान थी। उसका लड़का बिशप (लाट पादरी) था, उसी हवाई जहाज़ में। कहने लगी, यह क्या है ? कहने लगा, है तो क्राईस्ट का कथन मगर समझ नहीं आती दो आंखों के जाने वाले क्यों नर्कों में जा सकते हैं। एक आंख से देखो If thine eye be single, thy whole body shall be full of light दो की यदि एक आंख बन जाए तो अंदर ज्योति का विकास हो जाएगा, अंतर ध्वनि जारी हो जाएगी। बात समझे ? सौ सयाने एक ही मत। Inner way up वही है। तो आपको यह inner way up बतलाया जा रहा है, उसके लिए यह बाहरी लवाज़मा (आवश्यक चीज़ें) हैं, जो किया जा रहा है, कि प्रभु का पाना मुश्किल नहीं है, अंतर रसाई का पाना मुश्किल नहीं है, बल्कि इंसान का बनना मुश्किल है।

कहो कबीर जन जानेआ, जो जानेआ तौ मन मानेआ ॥

कहते हैं कि ऐसा पुरुष हकीकत को जानने वाला हो जाता है। जब जान लिया तो मान गया। ग्रंथों पोथियों में यह बातें लिखी हैं, महात्मा भी यही कहते हैं। मगर जब तक हम न देखें, हमें यकीन कैसे आए ? तो इसलिए कहा है :

जब लग न देखूं अपनी नैनी, तब लग न पतीजूं गुरु की बैनी ।

कहते हैं जो भी करेगा योग, गुरु उसको बतलाएगा कैसे इंद्रियों के घाट से लूटे जा रहे हो, इसको कैसे बंद कर सकते हो, कैसे अंतर्मुख हो सकते हो ? Firsthand experience (व्यक्तिगत अनुभव) देगा, तो higher contact में जाकर यह मन काबू में आ जायेगा। महारस को पाकर बाहर इंद्रियों के

भोग-रस फीके पड़ जाएंगे, जीवन सफल हो जाएगा। जब जान लोगे तो मान जाओगे। जब तक जानो नहीं, देखो नहीं, यकीन कैसे आ सकता है? तो अंतर की दुनिया बाकायदा है भई! Inner way up बड़ा definite है, जैसे दो और दो चार होते हैं। अंधों को बिठाओ, वह भी लाइट को देखते हैं मगर इसका समर्थ पुरुष कोई हो तो।

ऐसे महात्मा आगे भी कम थे। ज्यादातर लोग आपको बाहरमुखी साधनों में लगा रहे हैं। वह पहली ज़मीन है। preparation of the ground (ज़मीन की तैयारी) है। उससे फायदा उठा लो। जब तक inner way इंद्रियों के घाट से ऊपर जो चलता है, where the world's philosophies end there the religion starts. जहां दुनिया के फिलसफे खत्म हो जाते हैं, वहां से असल परमार्थ शुरू होता है। जब तक उधर नहीं आते मन को शांति नहीं। तो यह शब्द था, कबीर साहब का, सहज ही में आ गया था और उसी मज़मून के मुताबिक था जो स्वामी जी ने शुरू किया था। आपके सामने रखा गया। जो बात समझ आई है, इसको अपने हृदय में धारण करो। यहां आने का फायदा यही है कि जीवन को पलटा दो, अपने घरों को बदलो, संयम का जीवन बनाओ। तुम भी सुखी हो जाओ, जो तुमसे मिले वह भी सुखी हो जाए।

UNESCO conference की talk में मैंने कहा कि मान लिया सारा जहान बिगड़ चुका है। हम क्या करें, कम से कम जो बैठे हो, तुम अपने आप ठीक से शुरू हो जाओ। तुम सुखी हो गए तो कम से कम जो तुम्हारे साथ हैं वह भी तो बदलेंगे न! बात यह है कि हम समझते हैं, दूसरों को उपदेश देते हैं, अपने आपको छोड़े चले जाते हैं, इसलिए किसी का reform (सुधार) नहीं होता।

जो वचन गुरु पूरे कहियो, सो मैं छीक गाठड़ी बांधा !!

पल्ले बांधो, If ye love me keep my commandments क्राईस्ट कहता है कि अगर तुम मुझे प्यार करते हो तो मेरा कहना मानो। हम कहना

नहीं मानेंगे, सौ हीले करेंगे, सौ माथे टेकेंगे, नाचेंगे भी, कूदेंगे भी, बड़े डी-डी भी करेंगे, मगर कहना नहीं मानेंगे। कहना तो यही है, चीज़ मिली है, इसको संभालो, जीवन की पड़ताल रखो। वही बातें खोल खोलकर आपके सामने हर बार रखी जाती हैं, कभी एक पहलू से, कभी दूसरे से, कभी तीसरे से। अरे भाई, भोग तो आप ही डालना होगा। समझे ! पंडित और भाई आपका यह भोग नहीं डाल सकते। अपने जीवन को बनाओ भई। मनुष्य जीवन गुजरा जा रहा है। बहुत वक्त चला गया।

एर यह दुनिया दिन चार धिहाड़े रहो अलख लौ आई ॥

इंद्रियों के घाट से ऊपर आओ भई। जितना वहां से हटोगे, उतने ही हकीकत के नज़दीक हो जाओगे। जितने फैलाव में जाओगे उतने ही दूर हो जाओगे। वह परमात्मा जिसको तुमने पाना है, वह तुम्हारी आत्मा की आत्मा है।

**वस्तु कहीं ढूंढे कहीं, केहि विधि आवे हाथ ।
कहे कबीर तब पाईये जो भेदी लीजे साथ ॥**

राज़ (भेद) का जो वाकिफ है, वह आपको बिठाएगा, way up करेगा, अंतर्मुख आपको कुछ मिलेगा। उस को develop करो (बढ़ाओ) जीवन को संयम में लाकर।

